साप्ताहिक
जागत गांव हमार
पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक
RNI-MPHIN/2015/72544
चौपाल से भोपाल तक
भोपाल, सोमवार 17-23 जुलाई 2023 वर्ष-9, अंक-14
भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित
पृष्ठ :-8, मूल्य :- 2 रुपए

शिवराज सरकार ने की 60 लाख रुपए की वसूली

मध्य प्रदेश में किसानों के नाम पर 12.42 करोड़ का घोटाला

सात पटवारी और दो लिपिक पर गिरी गाज

2018 से 2022 के बीच किया गया खेला

12.42 करोड़ रुपए दूसरे खातों में डाल दिए

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्य प्रदेश में सरकार तो प्राकृतिक आपदा से पीड़ित किसानों की सहायता करने के लिए राहत राशि देती है पर 12 जिलों में यह उन तक नहीं पहुंच पाई। वर्ष 2018 से 2022 के बीच भिंड, श्योपुर, देवास, सीहोर, शिवपुरी, मंदसौर सहित कई जिलों में किसानों के नाम पर 12.42 करोड़ रुपए की अनियमितता की गई। क्षतिपूर्ति की यह राशि पटवारी सहित अन्य कर्मचारियों ने अपने परिजनों या निकटतम लोगों के खातों में डाल दी। महालेखाकार के अंकेक्षण प्रतिवेदन में भी यह बात सामने आई और विधानसभा में राजस्व विभाग ने भी इसे स्वीकार किया है। अब तक 60 लाख रुपए की वसूली हो चुकी है। देवास में सात पटवारी और दो लिपिक को निलंबित करने के साथ 35 की विभागीय जांच की जा रही है।

विधानसभा में उठा था मुद्दा

मध्यप्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष डॉ.गोविंद सिंह सहित अन्य विधायकों ने ओलावृष्टि, सूखा और अतिवृष्टि से किसानों को हुए नुकसान की भरपाई के लिए दी जाने वाली आर्थिक सहायता में अनियमितता का विषय उठाया था।

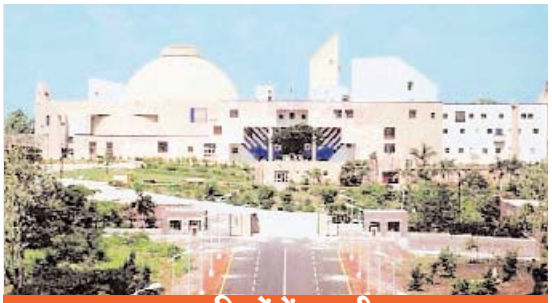

इन जिलों में गड़बड़ी

शिवपुरी में चार कर्मचारियों ने दो करोड़ 77 लाख 62 हजार, मंदसौर में 64 लाख 51 हजार, छतरपुर में 37 लाख 95 हजार 347, खंडवा में 11 लाख 61 हजार, आगर-मालवा में 23 लाख 87 हजार, रायसेन में 70 लाख 60 हजार, सतना में 12 लाख 94 हजार, श्योपुर में दो करोड़ 83 लाख 88 हजार, देवास में एक करोड़ 45 लाख, सीहोर में एक करोड़ 13 लाख 46 हजार और चंबल संभाग में दो करोड़ 24 लाख 31 हजार रुपए के भुगतान में गड़बड़ी हुई। छतरपुर, सतना और आगर मालवा में 60 लाख 31 हजार से अधिक की वसूली हो चुकी है।

राजस्व मंत्री दी जानकारी

राजस्व मंत्री गोविंद सिंह राजपूत द्वारा दिए लिखित उत्तर में बताया गया कि भिंड, श्योपुर, देवास, सीहोर, शिवपुरी, मंदसौर, छतरपुर, खंडवा, सिवनी, आगर-मालवा, रायसेन, सतना सहित जिलों में प्रभावित किसानों के बैंक खातों में राशि डालने के स्थान पर राजस्व अधिकारियों-कर्मचारियों ने अपने परिजनों या निकटतम लोगों के बैंक खातों में राशि डाल दी।

राजस्व विभाग ने जारी किए नए दिशा-निर्देश

प्रदेश में कम्प्यूटरीकृत जारी होगी भू-अधिकार पुस्तिका

भोपाल। जागत गांव हमार

किसानों को भू-अधिकार पुस्तिका उपलब्ध कराने के लिए राजस्व विभाग द्वारा दिशा-निर्देश जारी किए गए है। जारी निर्देशों के तहत अब नवीन भू-अधिकार पुस्तिका कम्प्यूटरीकृत रूप में ही जारी होगी। पूर्व में जारी भू-अधिकार पुस्तिका यथावत प्रचलन में रहेगी। परंतु नवीन पुस्तिका कम्प्यूटरीकृत रूप में ही जारी होगी। भू-अधिकार पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के लिए 30 रुपए और अतिरिक्त प्रति पृष्ठ 15 रुपए शुल्क निर्धारित है। भू-अधिकार पुस्तिका न्यूनतम दो पृष्ठों की होगी, इस प्रकार दो पृष्ठों की भू-अधिकार पुस्तिका की कीमत 45 रुपए निर्धारित की गई है। अतिरिक पृष्ठ जोड़े जाने पर प्रतिपृष्ठ 15 रुपए देय होगा। भू-अधिकार पुस्तिका शुल्क अदा करने पर भूलेख पोर्टल पर आनलाइन, आईटी सेन्टर, लोक सेवा केन्द्र एवं शासन द्वारा प्राधिकृत सेवा प्रदाता से प्राप्त की जा सकेगी।

मध्यप्रदेश भू-राजस्व संहिता नियम, 2020 के प्रविधान अनुसार भू-सर्वेक्षण उपरांत प्रथमवार भू-अधिकार पुस्तिका संबंधित भूमिस्वामी को निःशुल्क प्रदाय की जाएगी। इसके अतिरिक्त भूराजस्व संहिता 1959 के अंतर्गत विनिर्मित नियमों में जहां-जहां भू-अधिकार पुस्तिका निश्शुल्क जारी करने का प्रविधान है, संबंधित व्यक्ति को भू-अधिकार पुस्तिका निःशुल्क दी जाएगी। निःशुल्क दी जाने वाली भू-अधिकार पुस्तिका जारी करने के लिए तहसीलदार को भूलेख पोर्टल पर लागिन कर अपने लागिन से भू-अधिकार पुस्तिका का प्रिंट जारी करने का अधिकार होगा।

पहले पेज पर डाली जाएगी समग्र आईडी

भू-अधिकार पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ पर संबंधित भूमिस्वामी की समग्र आईडी डाला जाना सुनिश्चित किया जाएगा। पुस्तिका पर भूमिस्वामी का फोटो मुद्रित होगा। यदि भूमिस्वामी का प्रकार निजी संस्था है, तो भू-अधिकार पुस्तिका पर समग्र आईडी एवं फोटो की आवश्यकता नहीं होगी। यदि संबंधित कृषक का फोटो भूलेख पोर्टल के डाटाबेस में उपलब्ध है तो उसे भू-अधिकार पर किसान से सत्यापित कराया जाकर मुद्रित कराया जाएगा। यदि किसान का फोटो भूलेख पोर्टल के डाटाबेस में उपलब्ध नहीं है अथवा भूलेख पोर्टल पर उपलब्ध फोटो से वह संतुष्ट नहीं है तो संबंधित कृषक के आधार ई-केवायसी के माध्यम से उसे प्राप्त किया जाएगा। इस प्रकार प्राप्त फोटो को संबंधित पटवारी से सत्यापित भी कराया जाएगा।

पटवारी करेंगे फोटो का सत्यापन

यदि कृषक के पास आधार नंबर नहीं है अथवा वह आधार नंबर प्रदाय नहीं कर रहा है तो ऐसी स्थिति में कृषक का फोटो आनलाइन आवेदन करते समय लिया जाकर पटवारी से सत्यापित कराया जाएगा। पटवारी को फोटो तीन कार्यदिवस में सत्यापित करना अनिवार्य होगा। यदि इस अवधि में पटवारी द्वारा कृषक के फोटो को सत्यापित अथवा अमान्य नहीं किया जाता है, तो यह मानकर कि आधार ई-केवायसी से प्राप्त अथवा कृषक द्वारा प्रदाय फोटो सही है, भू अधिकार पुस्तिका जारी की जाएगी।

26 जुलाई को उमरिया में सीएम शिवराज सिंह चौहान बोनस के बाद देंगे उपहार

तेंदूपत्ता संग्राहकों को साड़ी, जूता-चप्पल-बोतल देगी सरकार

भोपाल। जागत गांव हमार

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान तेंदूपत्ता संग्राहकों को जूते-चप्पल, पानी की बोतल और छाता बांटकर उमरिया से चरण पादुका - 2 योजना का शुभारंभ करेंगे। मध्य प्रदेश लघु वनोपज संघ ने इस सामग्री वितरण कार्यक्रम को चरण पादुका -2 का नाम दिया है। तेंदूपत्ता संग्राहकों को बोनस बांटने के बाद अब उन्हें उपहार देने की तारीख 26 जुलाई तय की गई है। इसके तहत 15 लाख 24 हजार तेंदूपत्ता संग्राहकों को जूता- चप्पल, पानी की बोतल और छाता बांटा जाएगा। संग्राहकों के परिवारों की 18 लाख 21 हजार महिलाओं को साड़ी बांटी जाएगी।

पीएम और सीएम की तस्वीर छाते में रहेगी

प्रदेश के 41 लाख तेंदूपत्ता संग्राहकों को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की तस्वीर लगे छाते वितरित किए जाएंगे। छाते के साथ मिल्टन की एक पानी बोतल, चूता- चप्पल और दो साड़ी भी वितरित की जाएगी। लघु वनोपज का संग्रहण और विक्रय दूरस्थ अंचलों में रहने वाले ग्रामीणों के लिए अजीविका का मुख्य साधन है। 15 लाख परिवारों में से 50 प्रतिशत से अधिक तेंदूपत्ता संग्राहक आदिवासी हैं।

261 करोड़ की साड़ी

संग्राहकों को ये उपहार बांटने में 261 करोड़ 69 लाख व्यय होगा। संग्राहकों के 15 लाख 24 हजार परिवारों को 285 रुपए वाली पानी की बोतल और 200 रुपए वाला छाता दिया जाएगा। परिवार के एक पुरुष को का जूता और एक महिला को 195 रुपये की चप्पल दी जाएगी।

40 करोड़ 51 लाख का बजट

संग्राहक के परिवार की सभी 18 लाख 21 हजार महिला सदस्यों को 402 रुपए मूल्य की साड़ी वितरित की जाएगी। परिवहन और वितरण पर 40 करोड़ 51 लाख का अलग से बजट रखा गया है। इन सामग्रियों की खरीदी लघु उद्योग निगम के माध्यम से करने की तैयारी है। सामग्री के शीघ्र प्रदाय के लिए प्रदेश की जिला यूनियनों को चार समूहों में बांटा जाएगा।

10.44 लाख हेक्टेयर कम हुई तुवर की बोवनी

भोपाल। जागत गांव हमार

कृषि मंत्रालय ने देश में खरीफ की बिजाई के ताजा आंकड़े जारी कर दिए हैं। देशभर में दलहन में तुवर की बोवनी अब तक 14.11 लाख हेक्टेयर हुई है। देखा जाए तो बीते वर्ष 24.55 लाख हुई थी। इसी तरह उड़द भी बीते वर्ष से कम 15.8 लाख हेक्टेयर के मुकाबले 13.42 लाख हेक्टेयर बोवनी अब तक हुई है।

हालांकि मूंग में देश की बोवनी अच्छी है। बीते साल के 20.06 लाख हेक्टेयर के मुकाबले 21.23 लाख हेक्टेयर में हुई है। मध्यप्रदेश में मूंग की सरकारी खरीदी अच्छी होने से किसान मंडियों में माल नहीं ला रहे हैं।

खाद व उर्वरक देने के काम में आने वाले कृषि यंत्रों की होती है आवश्यकता

कम लागत में किसान खेती को बना सकते हैं लाभा का धंधा

किसानों के लिए उपयोगी, खरीफ सीजन में काम आने वाले कृषि यंत्र

भोपाल। रबी फसलों की कटाई पूरी हो चुकी है और किसान खरीफ फसलों की बुवाई के लिए खेत तैयार करेंगे। ऐसे में किसानों को खेत की तैयारी से लेकर बीज बुवाई, खाद व उर्वरक देने के काम में आने वाले कृषि यंत्रों की आवश्यकता होती है। खरीफ फसलों की खेती के लिए जिन कृषि यंत्रों की जरूरत होती है इसकी जानकारी होना बेहद जरूरी है जिससे किसान भाई सही कृषि यंत्र का चुनाव करके अपनी खेती के काम को आसान बना सकें।

ट्रैक्टर

खेती के लिए ट्रैक्टर प्रमुख कृषि मशीनरी है। इससे खेती के अधिकांश काम निपटाये जा सकते हैं। खेत की तैयारी से लेकर मंडी में फसल ले जाने तक में ट्रैक्टर की अहम भूमिका रहती है। इसलिए किसानों के लिए ट्रैक्टर काफी महत्वपूर्ण कृषि मशीनरी है। ट्रैक्टर से जोड़कर कई प्रकार के कृषि यंत्र जैसे - कल्टीवेटर, रोटावेटर आदि चलाए जा सकते हैं।

मिट्टी पलटने वाला हल (एमबी प्लाऊ)

एमबी प्लाऊ का उपयोग मिट्टी को पलटने के लिए किया जाता है। इसे खेत की प्राथमिक जुताई के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इस यंत्र से खेत की गहरी जुताई की जा सकती है। इससे जुताई करने पर खरपतवार और फसल अवशेषों को नियंत्रित किया जा सकता है।

तवेदार हल (डिस्क प्लाऊ)

तवेदार हल जिसे डिस्क प्लाऊ के नाम से जाना जाता है। इस हल से कडी एवं घास व जड़ों से भरी भूमि की जुताई का काम आसानी से किया जा सकता है। इसमें तवे होते हैं जिनके कारण ये खरपतवारों को काटता हुआ चलता है। चिकनी नमीयुक्त मिट्टी में भी इसे प्रयोग किया जा सकता है। तवों में लगे हुए स्केपर की वजह से इसमें गीली मिट्टी भी इसमें नहीं चिपक पाती है।

हैरो

हैरो खेत की जुताई के काम आने वाला एक कृषि यंत्र है। हैरो चलाने का मुख्य उद् ?देश्य जमीन को भुरभुरा बनाना और भूमि की नमी को सुरक्षित रखना है। इसका प्रयोग बुवाई से तुरंत पहले किया जाता है ताकि बीजों की बुवाई करते समय खेत में खरपतवार नहीं रहें। ये दो प्रकार का होता है, पहला, तवेदार हैरो और दूसरा ब्लैड हैरो।

कल्टीवेटर

इसका प्रयोग खेत की जुताई के बाद खेत के ढेलों को तोड़ने, मिट्टी को भुरभुरा बनाने एवं खेत में सूखी घास व जड़ों को ऊपर लाने के लिए किया जाता है। इस यंत्र के प्रयोग कतार में बोई गईं फसलों की निराई के काम में भी किया जाता है। ये दो प्रकार के होते हैं, पहला, स्प्रिंग टाइन कल्टीवेटर और दूसरा रिजिड टाइन कल्टीवेटर।

रोटावेटर

रोटावेटर प्रमुख ट्रैक्टर के साथ जोड़कर चलाए जाने वाला कृषि यंत्र है जिसका प्रयोग सीड बैड तैयार करने में किया जाता है। इसके अलावा इसका इस्तेमाल मक्का, गेहूं, गन्ना आदि फसलों को काटने और मिलाने में मदद करने के लिए भी किया जाता है। एक रोटरी कल्टीवेटर मिट्टी के पोषण में सुधार और ईंधन लागत, समय और ऊर्जा को बचाने में आपकी मदद करता है।

पडलर

इस यंत्र की सहायता से खेत में मचाई का काम किया जाता है। जुताई के बाद खेत में 5-10 सेमी पानी भर कर इस यंत्र की सहायता से मचाई की जाती है, जो धान की रोपा पद्धति के लिए जरूरी होता है। पडलर का उपयोग खरपतवारों को नष्ट करने के लिए किया जाता है। यदि खेत में पानी जमीन के अंदर ज्यादा रिसने लगे तो उसे कम करने के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है। इसके अलावा धान के पौधों की रोपाई के लिए उपयुक्त परिस्थिति बनाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

प्लांटर

इस कृषि यंत्र का इस्तेमाल बीजों की बुवाई के लिए किया जाता है। इस यंत्र की सहायता से बीजों को एक निश्चित दूरी पर पंक्तियों में बुवाई की जा सकती है। इसमें अलग-अलग फसलों के बीजों के लिए अलग-अलग प्लेटों तथा स्प्रोकिटों का प्रयोग किया जाता है। इससे बीजों की बुवाई का काम बहुत ही कम समय में व्यवस्थित तरीके से पूरा किया जा सकता है।

सीड कम फर्टिलाईजर ड्रिल

सीड कम फर्टिलाइजर ड्रिल मशीन की सहायता से एक साथ कई कतारों में बीज की बुवाई की जा सकती है। यह यंत्र मिट्टी के अंदर गहराई तक बीज की बुवाई कर सकता है। इसकी यंत्र की सहायता से उचित दूरी पर बीजों की बुवाई की जा सकती है। इस मशीन की मदद से खेतों में बीज और उर्वरक एक निश्चित अनुपात में एक साथ खेत में बोये जा सकते हैं।

ट्रैक्टर चालित बीज एवं उर्वरक बुआई यंत्र

यह कृषि यंत्र ट्रैक्टर के साथ चलाए जाने वाला कृषि यंत्र है जो 7-13 कतारों में बीज की बुवाई कर सकता है। इस यंत्र के इस्तेमाल से बीज और खाद भूमि में उचित गहराई पर डाले जा सकते हैं। यह ट्रैक्टर की तीन प्वांइट लिंक के साथ जुड़ा हुआ होता है जिससे इसे चलाना काफी सुविधाजनक हो जाता है।

बाजरा की मांग सालभर बाजार में बनी रहती है...

पशुपालक किसानों के लिए बाजरे की खेती ज्यादा लाभ का सौदा

बाजरे की 10 किस्मे किसानों को कर सकती हैं मालामाल

भोपाल। जागत गांव हमार

खरीफ की प्रमुख फसल बाजरे की बुवाई जुलाई महीने से शुरू हो जाती है। प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट के प्रचुर स्रोत होने की वजह से बाजरा को पोषक अनाज के तौर पर जाना जाता है। इसके अलावा पशुओं के लिए भी प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट की प्रचुर मात्रा वाले चारे का इंतजाम भी बाजरे से हो जाता है। इस फसल की सबसे खास बात यह है कि कम पानी वाले इलाकों में भी बाजरा का उत्पादन किया जा सकता है। बाजरा की मांग सालभर बाजार में बनी रहती है। इससे पशुओं का चारा और दाना दोनों का इंतजाम हो जाता है। यही वजह है कि पशुपालक किसानों के लिए बाजरे की खेती ज्यादा लाभ का सौदा साबित होती है।

एचएचबी 67-2

यह बाजरा की सबसे ज्यादा पैदावार देने वाली किस्म भी है। इस किस्म की खासियत इस प्रकार है। यह किस्म 62 से 65 दिनों में पकती है। बाजरा के इस किस्म के पौधों की ऊंचाई 160 से 180 सेंटीमीटर होती है। यह किस्म जोगिया रोग और सूखे के प्रति सहनशील है। **उत्पादन:** एचएचबी 67 की तुलना में इस किस्म से दाना और पशुओं के चारे दोनों का उत्पादन 22प्रतिशत ज्यादा होता है। 20 से 22 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होती है।

सीजेडपी-9802

यह बाजरा खाने में काफी स्वादिष्ट होता है। 2002 में इस किस्म की खोज हुई। इस किस्म के पौधे की ऊंचाई 185 से 200 सेंटीमीटर होती है। इसमें बिना बाल वाले और कसे हुए फल पाए जाते हैं। इस किस्म को पकने से 70 से 75 दिन का समय लगता है। जोगिया रोग प्रतिरोधक होने के साथ-साथ इस किस्म की पैदावार 13 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

आरएचबी 121:

बाजरे की इस किस्म को राजस्थान के किसान बहुत पसंद करते हैं। यह किस्म कई प्रकार के रोगों की प्रतिरोधी और किसानों को अच्छी उपज देने वाली है। इसकी खोज वर्ष 2001 में हो गई थी। इस किस्म के पौधों की ऊंचाई 165 से 175 सेंटीमीटर होती है। इस किस्म का बाजरा 75 से 78 दिनों में पक जाता है। इस किस्म में औसत दानों की उपज 22 से 25 क्विंटल वहीं चारे की उपज 26 से 29 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

पूसा 605:

1999 में बाजरे की इस किस्म की खोज पूरी हो गई थी। 75 से 80 दिनों में पकने वाली इस किस्म को बेहद कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए अच्छा माना गया है। इस किस्म से दाने की औसतन पैदावार 9 से 10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। साथ ही सूखे चारे की पैदावार 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म के पौधे 125 से 150 सेंटीमीटर ऊंचे होते हैं।

राज 171:

मध्यम और सामान्य वर्षा वाले क्षेत्रों में बाजरा की इस किस्म को उगाया जाता है। इस किस्म से बाजरे की अच्छी पैदावार ली जा सकती है। मध्यप्रदेश में इस किस्म की व्यापक स्तर पर खेती की जाती है। इस किस्म की खोज वर्ष 1992 में हुई जिसकी खासियत इस प्रकार है। इस किस्म से पैदा होने वाले बाजरे के सिट्टे लंबे, बेलनाकार और कसे हुए होते हैं। 85 दिनों में यह किस्म पक जाती है। सिट्टो की लंबाई औसतन 25 से 26 सेंटीमीटर होती है। पौधों की ऊंचाई 170 से 200 सेंटीमीटर इसकी ऊंचाई होती है। यही वजह है कि इस किस्म से सूखे चारे की पैदावार काफी अच्छी हो जाती है।

किसान जल्दी पकने वाली किस्म की खेती करें

आई. सी. एम. एच 356: 160 से 170 सेंटीमीटर ऊंचाई वाली इस किस्म से भी अच्छी खासी मात्रा में चारे की पैदावार कर सकते हैं। पशुपालक किसान इस जल्दी पकने वाली किस्म की खेती कर सकते हैं। इसकी खासियत इस प्रकार है। यह किस्म 75 दिन में पकती है। बाजरे की इस किस्म से 18 से 20 क्विंटल अनाज की पैदावार की जा सकती है।

चारे की पैदावार 38 से 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर

7. एम एच 169 (पूसा 23): 1987 में इस किस्म की खोज हुई। 165 सेंटीमीटर ऊंचाई वाली इस किस्म की मदद से पशुपालक किसान पशुओं के लिए चारा और अनाज की अच्छी पैदावार लेने में सक्षम होते हैं। इसकी खासियत इस प्रकार है। इस किस्म से दानों की औसतन पैदावार 20 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टर है। यह किस्म मध्यम सूखा सहने में सक्षम है। 80 से 85 दिनों की अवधि में बाजरे की यह किस्म पक जाती है।

यह किस्म किसानों को काफी मुनाफा देने वाली

8. जीएचबी 538: अधिक उपज देने वाली बाजरे की यह किस्म किसानों को काफी मुनाफा देने वाली किस्म है। इस किस्म से बाजरा की पैदावार ज्यादा तो होती ही है। साथ ही इसके और भी खासियत हैं जो इस प्रकार हैं। यह किस्म 24 क्विंटल प्रति हेक्टेयर दानों की पैदावार करती है। अधिक पैदावार की वजह से ही यह बहुत सारे किसानों की मनपसंद किस्म है। इस किस्म से 42 क्विंटल के लगभग चारा की पैदावार होती है। यह किस्म 70 से 75 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। छेदक एवं तना मक्खी के प्रति भी यह किस्म सहनशील है।

9. जीएचबी 719:

कम समय में पकने वाली बाजरे की यह किस्म किसानों के बीच काफी लोकप्रिय है। यह किस्म 70 से 75 दिनों में पक जाती है। इसकी बालियां 43 से 45 दिनों में निकल आती है। इसकी और भी खासियत हैं जो इस प्रकार है। इस किस्म से दानों की औसत उपज 20 से 24 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। वहीं चारा की बात करें तो इस किस्म की औसत चारा उपज 40 से 50 क्विंटल है। यह किस्म जोगिया रोग के लिए प्रतिरोधी है। साथ ही कीड़ों के लिए भी बेहद सहनशील है। यह किस्म कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए अच्छी है। यह सूखा को सहन करने में सक्षम है।

10. एचएचबी 90

यह एक हाइब्रिड किस्म है, जो लंबी ऊंचाईयों के होते हैं और किसानों को काफी कम फसल नुकसान का सामना करना पड़ता है। रोएं और सिट्टा कसे हुए होने की वजह से चिड़ियों और अन्य पक्षियों से ज्यादा हानि नहीं होते। इसके अलावा इस किस्म की और भी खासियत है, जो इस प्रकार है। इस किस्म में बाजरे की ऊंचाई 170 से 180 सेंटीमीटर होती है। यह किस्म दानों की पैदावार 20 से 22 क्विंटल कर सकती है। अधिक ऊंचाई के मोटे और बड़े पौधों की वजह से इस किस्म से चारों की अच्छी पैदावार हो जाते हैं। प्रति हेक्टेयर 50 से 60 क्विंटल सूखे चारे की पैदावार ली जा सकती है। जोगिया रोग और सूखा के प्रति यह किस्म सहनशील है।

पौध वृद्धि तथा गाठों के गठन के लिए औसत तापमान 15 से 20 डिग्री सेंटीग्रेट अच्छा

गांठ गोभी की उन्नत खेती: किस्में, देखभाल और उपज

भोपाल। जागत गांव हमार

गांठ गोभी को देश में कई नामों से जाता है। इसकी खेती काश्मीर, बंगाल, महाराष्ट्र आसाम, उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब और दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों में की जाती है। गांठ गोभी का गोभी वर्गीय सब्जियों में महत्त्वपूर्ण सब्जी है, परन्तु काफी कम क्षेत्र में इसकी खेती हो रही है। देश के पहाड़ी क्षेत्रों की लोकप्रिय सब्जी है, क्योंकि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी इसका खेती सम्भव है।

वैज्ञानिक तकनीक से इसकी खेती कर के इसके अच्छी गुणवता के फल और अच्छी पैदावार प्राप्त कर सकते हैं। गांठ गोभी के लिए ठंडी और गर्म जलवायु की आवश्यकता होती है। पौध वृद्धि तथा गाठों के गठन के लिए औसत तापमान 15 से 20 डिग्री सेंटीग्रेट अच्छा माना गया है।

बुवाई का समय

गांठ गोभी की पर्वतीय क्षेत्रों में बीज की बुवाई तथा रोपाई के समय का निर्धारण क्षेत्र विशेष के उपरोक्त सुझाए गए तापमान एवं वातावरणीय परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए, जैसे-

- मैदानी क्षेत्रों में- अगस्त से अक्टूबर उपयुक्त है।
- मध्य क्षेत्रों में- जुलाई से अक्टूबर उपयुक्त है।
- ऊंचे क्षेत्रों में- मार्च से जुलाई उपयुक्त है।

बीज की मात्रा: गांठगोभी के लिए 1 से 1.5 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है।

गांठ गोभी की उन्नत खेती के लिए भूमि का चयन

गांठ गोभी की लगभग सभी प्रकार की मिट्टियों में इसकी खेती सम्भव है, लेकिन जीवांश पदार्थों की मात्रा प्रचुर होनी चाहिए। अगेती फसल के लिए बलुई दोमट मिट्टी सर्वोत्तम होती है। भूमि का पी एच मान 5.5 से 6.5 उचित माना गया है।

उन्नत किस्में

गांठ गोभी की अभी तक अधिक किस्मों का विकास नहीं हुआ है, ह्वाईट वियना, परपल वियना लार्ज ग्रीन किंग नाम की प्रमुख किस्में हैं।

लार्ज ग्रीन: हरी व गोल, हरे गोल उभार वाली, अगेती, छोटे शिखर, बड़े आकार की, कोमल और सुगंधित, गूदा सफेद, करीब 5 दिन में तैयार, औसत पैदावार 225 से 250 किंवटल प्रति हैक्टेयर, मध्य और ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों के लिए उपयुक्त किस्म है।

किंग ऑफ नाथ: छोटे पौधे की किस्म हैं, लगभग 20 से 30 सेंटीमीटर पौधे की ऊंचाई होती है। इसकी पतियां गाढ़ी हरी और इसकी गाठें चपटा गोल आकार की होती है। फसल 60 से 65 दिन में तैयार हो जाती है।

परपल वियना: यह भी छोटी किस्म है, गांठे मध्यमा आकार की होती है। पौध रोपण के 55 से 65 दिन पर गाठें बनना प्रारम्भ होती है। इसकी काफी अच्छी पैदावार प्राप्त होती है।

व्हाईट विआना: सफेद, उभरे स्थानों और छोटे शिखर वाली, मध्य आकार, हल्का हरा या सफेद रंग, नरम, थोड़ी गंध, 50 से 60 दिन में गांठ बनना शुरू, औसतन पैदावार 150 से 200 किंवटल प्रति हेक्टेयर, मध्य एवं ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों के लिए उपयुक्त किस्म है।

पालम टैन्डरनोब: छोटे हरे पत्ते, गांठे गोल, समतल, पतली, रेशेरहित तथा गूदेदार, अगेती, व्हाईट विआना किस्म से एक सप्ताह पहले तैयार, औसत पैदावार 250 से 2.5 किंवटल प्रति हैक्टेयर, सभी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त किस्म है।

जानकारी के अभाव से जूझते छोटे किसानों को शिक्षित करना जरूरी

छोटे किसानों के पास इतनी बड़ी जमीन नहीं होती जिस पर ठीक से खेती की जा सके। यदि होती भी है तो टुकड़े में। सामूहिक परिवारों के बिखरने से जैसे-जैसे जमीन के टुकड़े होते गए। वैसे-वैसे भूमि के उस हिस्से पर खेती की संभावना कम होती गई। यदि किसी के पास बड़ी जमीन है भी तो उस जमीन पर सिंचाई के लिए सुलभ साधन उपलब्ध नहीं है। जिनके पास सिंचाई के साधन है, उनके पास फसल बेचने के लिए पहले की तरह परंपरिक मंडिया नहीं है, जहां पारंपरिक तरीकों से हो रही पैदावार को बेचा जा सके।

मसलन देसी टमाटर और सलाद टमाटर में से सलाद टमाटर की मांग बाजार में ज्यादा है। ऐसे में जो किसान देसी टमाटर उगाते हैं, उन्हें सही दाम नहीं मिल पाते। छोटे किसान की बिगड़ती दशा का एक और कारण उसका समय के साथ विकसित न हो पाना भी है। उदाहरण के लिए पहले लैंडलाइन चलते थे, व्यापारियों के लिए समय अनुसार एसटीडी पीसीओ नया व्यापार बना। मोबाइल आया तो उसने लैंडलाइन का व्यापार ठप्प किया और पूरे मार्केट पर कब्जा किया। तब से सब कुछ ऑनलाइन बिकने लगा है, मोबाइल से लेकर रिचार्ज तक, उसने मोबाइल व्यापारियों के लिए मन्दी ला दी है। इस पूरी प्रक्रिया में व्यापारियों ने माथा पकड़ कर रोने की जगह समय और जरूरत के हिसाब से व्यापार में बदलाव करते गए।

किसानों के साथ समस्या रही कि वह समय के साथ बदला नहीं। वह देसी टमाटर लगाता है जो बिकता नहीं। इसकी जगह अब हाइब्रिड या अमेरिकन टमाटर लगा सकता है, लेकिन उसके लिए उसे अपनी जमीन को उस हाइब्रिड बीज के लिए तैयार करना होगा जो कि वह यूरिया डालकर करता है। रासायनिक खाद से जमीन की प्रकृतिक उपजाऊ क्षमता प्रभावित होती है, जमीन को नुकसान भी पहुंचाता है। मगर उसकी भरपाई के लिए किसान कोई तैयारी नहीं करता। सीखने या जानने की कोशिश नहीं करता। रासायनिक खाद के अलावा जो कीटनाशक डाले जाते हैं, वह मिट्टी को नुकसान पहुंचाते हैं उसकी भरपाई के लिए किसानों के पास ना ही कोई सही जानकारी है। ना ही इलाज के तरीके पता है। हमारे देश में आज भी ऐसे कीटनाशक बिकते हैं जो कई देशों में बैन है।

छोटे किसानों का नुकसान देश की अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक असर डालता है। इन समस्याओं से उबरने के लिए किसानों को चली आ रही कुछ नीतियों को बदलना होगा एवं सरकार को भी सही जानकारी पहुंचाने की ओर कुछ ठोस कदम उठाने होंगे। हमारे किसानों की दयनीय अवस्था का एक ही कारण होता है, वह धन का अभाव या कर्ज में डूबती की स्थिति। असल में सिर्फ यही कारण नहीं है।

खेती को होने वाले नुकसान के कई सारे छोटे-छोटे कारण हैं, जो साथ मिलकर एक विकराल रूप धारण कर लेते हैं। क्षेत्र ऐसे होते हैं जहां सिंचाई के लिए सुगम साधन उपलब्ध नहीं है। वहां परंपरागत फसलों को छोड़कर दूसरी प्रजातियों की खेती की जा सकती है।

फसल विविधता के लिए महिलाओं को सशक्त बनाने की जरूरत

एक नए शोध से पता चलता है कि निम्न और मध्यम आय वाले देशों में महिला किसानों को सशक्त बनाने से फसल विविधता में बढ़ोतरी हो सकती है। इससे स्वस्थ खाद्य पदार्थों की साल भर आपूर्ति में सुधार करने में मदद मिलेगी। द लैंसेट प्लैनेटरी हेल्थ में प्रकाशित किए गए अध्ययन से पता चलता है कि, कृषि संबंधी निर्णय लेने, सामुदायिक समूहों और कृषि उपकरणों के मालिकाना रूप में महिलाओं को शामिल करने से अधिक पोषण वाली फसलें उगाई जा सकती हैं। शोध में कहा गया है कि, अलग-अलग तरह की फसलें उगाने से पर्यावरणीय फायदे होते हैं, मिट्टी की उर्वरता में सुधार होता है, फसलों को कीटों और रोगों का खतरा कम होता है। शोधकर्ताओं का कहना है कि फसल विविधता किसानों को बाजार में बदलाव करने में सक्षम बनाती है और तेजी से बिगड़ रहे मौसम के पैटर्न के खिलाफ ढलने तथा निपटने में सक्षम बनाती है।

टीम के मुताबिक, शोध के निष्कर्ष दुनिया भर की खाद्य आपूर्ति में सुधार करने, दुनिया के कम आय वाले कृषकों की रक्षा करने और महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करने के नए रास्ते सुझाते हैं। दुनिया भर के अधिकतर किसानों के पास कृषि भूमि कम होती हैं और कृषि क्षेत्र में आधे से अधिक महिलाएं काम करती हैं, लेकिन आम तौर पर निर्णय लेने में उनकी भूमिका कम होती है। एडिनबर्ग विश्वविद्यालय के नेतृत्व में एक अंतरराष्ट्रीय टीम ने महिला सशक्तिकरण और फसल विविधता के बीच संबंधों का पता लगाने के लिए चार देशों - बुर्किना फासो, भारत, मलावी और तंजानिया के आंकड़ों का विश्लेषण किया। दक्षिण एशिया में पिछले अध्ययनों से पता चला कि महिला किसानों का समर्थन करने से फसल उत्पादन और विविधता बढ़ सकती है, लेकिन शोधकर्ताओं ने बताया कि, यह स्पष्ट नहीं था कि इस तरह के निष्कर्ष अन्य क्षेत्रों पर लागू होंगे या नहीं। विश्लेषण से पता चला कि महिलाओं की अधिक भागीदारी से फसल विविधता के तीन उपायों में सुधार हुआ, जिनमें उगाई गई फसलों की संख्या, उगाए गए खाद्य समूहों की संख्या और पोषक तत्वों से भरपूर फसलें उगाई गई। निम्न और मध्यम आय वाले देशों में, छोटे किसानों द्वारा उत्पादित फसलें स्थानीय समुदायों की आजीविका और खाद्य आपूर्ति की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं, लेकिन जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से उन पर खतरा बढ़ रहा है।

शोध टीम ने इन निष्कर्षों को लागू करने की योजना बनाई है जो महिलाओं का समर्थन करते हैं और महिलाओं के मौजूदा काम के बोझ को बढ़ाए बिना फसल विविधता में सुधार करते हैं। शोधकर्ताओं के मुताबिक, वे महिलाओं के अधिकारों के लिए महत्वपूर्ण कामयाबी के मुद्दों का समर्थन करने, एक स्वस्थ ग्रह से स्वस्थ आहार के प्रावधान के लिए कृषि उत्पादन और खाद्य प्रणाली के लचीलेपन के संदर्भ में महिला सशक्तिकरण पर विचार करने के प्रयासों को प्रोत्साहित करने की उम्मीद करते हैं।

हरियाली अमावस्या: प्रकृति के प्रति कृतज्ञ होने का पर्व

अमर पाल सिंह वर्मा

हमारे देश के लोगों ने सदियों पहले प्रकृति का महत्व समझ लिया और उसके संरक्षण के उपाय सुनिश्चित किए। आम जन-जीवन में प्रकृति के प्रति आस्था का भाव सदा से रहा है। हमारे यहां कई पर्व और त्योहार हैं जो पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हैं। हरियाली अमावस्या ऐसा ही पर्व है, जब लोग न केवल प्रकृति के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं बल्कि पर्यावरण को सुरक्षित रखने का संकल्प भी लेते हैं।

हमारे देश के दूरदर्शी लोगों ने सदियों पहले प्रकृति का महत्व समझ लिया और उसके संरक्षण के उपाय सुनिश्चित किए। आम जन-जीवन में प्रकृति के प्रति आस्था का भाव सदा से रहा है। देश में प्राचीन काल से ही लोग प्रकृति के प्रति श्रद्धा रखते आ रहे हैं। हमारे यहां ऐसे अनेक पर्व और त्योहार हैं जो पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हैं।

हरियाली अमावस्या ऐसा ही पर्व है, जब लोग न केवल प्रकृति के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं, बल्कि पर्यावरण को सुरक्षित रखने का संकल्प भी लेते हैं। सावन महीने की कृष्ण पक्ष की अमावस्या को हरियाली अमावस्या के नाम से जाना जाता है। इस अवसर पर लोगों में ज्या से ज्यादा पेड़ लगाने की होड़ लग जाती है। राजस्थान में यह पर्व धार्मिक आस्था से ज्यादा लोगों के लिए पर्यावरण चेतना जागृत करने और पर्यावरण को सुरक्षित कर प्रकृति के प्रति आभार जताने का खास मौका है।

राजस्थान में समुदाय में पर्यावरण संरक्षण की अनेक परंपराएं प्रचलित हैं। अगर लोगों ने तीज-त्योहारों के रूप में आनंदित होने के मौके तलाशे हैं तो उन्हें पेड़ लगाने के लिए खास अवसर भी बनाया है। हरियाली अमावस्या एक ऐसा ही अवसर है जो लोगों की धार्मिक आस्था के साथ-साथ पर्यावरण के प्रति चेतना का भी परिचायक है। हरियाली अमावस्या पर नदियों और तालाबों में स्नान व देव पूजन का जितना महत्व है, उतना ही महत्व वृक्षों की पूजा और पौधे लगाने का भी है। इस दिन राजस्थान में अनेक स्थानों पर मेले भरते हैं जिनमें लोग हर्षोल्लास से शामिल होते हैं। इन मेलों में हजारों की तादाद में जन समुदाय उमड़ता है। हरियाली अमावस पर जब लोगों को हम वृक्ष पूजन करते और पेड़ लगाते देखते हैं तो उनमें पर्यावरण के प्रति दायित्व के बोध का एहसास होता है। अजमेर के मांगलियावास गांव में पर्यावरण संरक्षण को समर्पित हजारों लोगों की सहभागिता वाला कल्पवृक्ष मेला पिछले 800 साल से लग रहा है। जोधपुर जिले में बालेसर के जिनजियाला गांव के तेखला धाम पर लगने वाले मेलों में हजारों लोग शिरकत करते हैं। जोधपुर में 105 किलोमीटर लंबी भोगिशैल परिक्रमा यात्रा को देखकर अयोध्या की 24 कोसी परिक्रमा का सा आभास होता है। भोगिशैल यात्रा की समाप्ति के उपरांत लोग वृक्ष पूजा कर पर्यावरण के संरक्षण का संकल्प करते हैं। साथ ही पौधे लगाते हैं। उदयपुर में हरियाली अमावस पर बड़े मेलों का आयोजन होता है। नागौर, सीकर, झुंझुनूं, चूरू जिलों में हरियाली अमावस की धूम रहती है। बीकानेर जिले में हरियाली अमावस को एक बड़े उत्सव की तरह मनाया जाता है। वहां के लोग इस दिन पौधे लगाने, प्रकृति के संरक्षण और गायों की पूजन की परंपरा को कायम रखे हुए हैं। बीकानेर जिले में मां भारती सेवा प्रन्यास, कामधेनु गौशाला अंबासर और राष्ट्रीय गाय आंदोलन राजस्थान जैसे संगठन इस मौके पर गांव-गांव में पर्यावरण को समर्पित कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं जिनमें शिरकत करने वाले ग्रामीण दीपदान करते हैं, पौधे लगाते हैं और गोचर, ओरण व जंगल को बचाने का संकल्प करते हैं। बीकानेर में जहां राष्ट्रीय गाय आंदोलन राजस्थान के अध्यक्ष सूरजमाल सिंह नीमराना ने हरियाली अमावस पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में गाय और पर्यावरण के महत्व को स्थापित किया है तो वहीं नागौर में वृक्ष मित्र पद्मश्री चौ. हिम्मताराम भांभू हरियाली अमावस जैसे अवसरों से आम जन की भागीदारी जोडक़र पर्यावरण की रक्षा में एक मिसाल बन गए हैं।

राजस्थान में समुदाय में वृक्षों के प्रति श्रद्धा भाव बेमिसाल है। हरियाली अमावस पर लोग पीपल, बरगद, नींबू, तुलसी के पौधे रोपते हैं। स्थानीय लोगों का इस बात में अटल विश्वास है कि वृक्षों में देवताओं का वास होता है। वृक्षों के संरक्षण और अधिकाधिक वृक्ष लगाने से देवता प्रसन्न होकर सुख-समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं।

प्रदेश की लोक संस्कृति में प्राचीन समय से ही पर्यावरण का अत्यंत महत्व है। हमेशा से पर्यावरण के महत्व और संरक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया जाता रहा है। आम जन पेड़ों और जीवों के साथ सह जीवन की परिकल्पना को साकार करता दिखाई देता है। हरियाली अमावस्या पर नदी-तालाब में स्नान, पितृ पूजा और देव पूजन के साथ-साथ पर्यावरण के महत्व को हमारे पूर्वजों ने जिस सोच के साथ जोड़ा है वह उनकी दूरदृष्टि का परिचायक है। जाहिर है कि हमारे पूर्वजों ने सदियों पहले ही पर्यावरण पर आने वाले संकट को भांप लिया था और इससे निपटने के तौर-तरीके भी बहुत पहले ही लोक जीवन में प्रचलित कर दिए। इन तौर-तरीकों को हम वृक्षों की पूजा, वृक्षारोपण, जल पूजन और जीव रक्षा के रूप में देखते हैं। पेड़-पौधों में ईश्वर के वास की धारणा पर्यावरण के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

...तो दुनिया में हो सकती है चावल की कमी

चावल भारतीय खाने का वो हिस्सा है जिसके बिना भोजन पूरा ही नहीं माना जाता। हालांकि, जिस तरह की रिपोटज़ आ रही है उसके मुताबिक अब पूरी दुनिया आने वाले समय में गंभीर चावल की समस्या से जूझने वाली है। आज इस आटिज़्कल में हम आपको इसकी वजह और भारत में इसकी वजह से पड़ने वाले असर के बारे में बताएंगे। इसके साथ ही आपको ये भी बताएंगे कि दुनिया की चावल प्रोडक्शन में भारत कितना योगदान देता है।

क्यों गहरा रहा है संकट: पूरी दुनिया में चावल का संकट क्यों गहराने वाला है इस पर हाल ही में फिच सॉल्यूशंस ने एक रिपोर्ट जारी की है। इस रिपोर्ट के अनुसार, चावल के बड़े उत्पादक देशों में चावल का प्रोडक्शन तेजी से घटा है। सबसे बड़ी बात की आने वाले समय में ये ग्राफनीचे ही जाता दिखाई दे रहा है। आपको बता दें, चीन, अमेरिका और यूरोपीय संघ में चावल का उत्पादन पहले के मुकाबले काफी घटा है। ये उत्पादन सिफज़ कुछ लाख टन का नहीं बल्कि उससे 'यादा घटा है। फिच सॉल्यूशंस के कमोडिटी एनालिस्ट चार्ल्स हार्ट के मुताबिक, इस साल बाजार में चावल की लगभग 1.86 करोड़ टन की कमी हुई है।

फिच सॉल्यूशंस की रिपोटज़ के अनुसार, दुनिया भर में चावल की इतनी कमी साल 2004 में हुई थी। अब चावल की कमी के बड़े कारणों की बात करें तो इनमें, रूस-यूक्रेन का युद्ध, चीन और पाकिस्तान जैसे चावल उत्पादक देशों में खराब मौसम, और क्लाइमेट चेंज बड़ा कारण है। इसके अलावा लोगों में खेती किसानी की कम होती दिलचस्पी भी बड़ा कारण है। इससे भारत जैसे देश पर कितना असर पड़ेगा और उससे आम आदमी कितना परेशान होगा ये समझने वाली बात है।

भारत में चावल का कितना उत्पादन: भारत में साल 2012-13 से ही हर साल चावल का उत्पादन एक लाख टन से ज्यादा ही रहा है। यूएस डिपार्टमेंट ऑफएग्रीकल्चर की रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में साल 2021-22 में 129,471 टन उत्पादन हुआ था। वहीं साल 2022-23 में भारत में चावल का उत्पादन 136,000 टन हुआ था। जबकि, 202×-24 में ये कम हो कर 134,000 टन हो गया। हालांकि, बाकी के देशों के मुकाबले भारत फिर भी ठीक स्थिति में है।

मृदा स्वास्थ्य को बढ़ाने के लिए मुख्य अतिथि के रूप में सुझाव दिया

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक में किसानों को दी सलाह

मंदसौर। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केन्द्र, मंदसौर की खरीफ-2023 की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 12 जुलाई 2023, बुधवार को हाईब्रीड मोड़ में आयोजित की गई। डॉ. आर.एस. चुण्डावत, अधिष्ठाता, उद्यानिकी महाविद्यालय, मन्दसौर की अध्यक्षता में आयोजित की गई। जिसमें डॉ. जी. एस. चुण्डावत, प्रभारी वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केन्द्र, मन्दसौर ने प्रगति प्रतिवेदन रबी-2022-23 एवं खरीफ-2023 की प्रस्तावित गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत की साथ ही फसल परीक्षणों एवं प्रदर्शनों की वर्तमान स्थिति से अवगत कराया। इस बैठक में अधिष्ठाता महोदय ने अपने अध्यक्षीय उदबोद्वन में कहा कि कृषक भाई पानी का बजट बनाकर उचित फसलों एवं किस्मों का चुनाव करे तथा सूक्ष्म एवं फव्वारा सिंचाई का उपयोग करें। कृषक फसल अवशेषों को उचित प्रबंधन कर मिट्टी में जैविक कार्बन की उपलब्धता को बढ़ाएं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के क्षेत्रिय निदेशक डॉ. एस.आर.के. सिंह ने मानव स्वास्थ्य, परिवार स्वास्थ्य, पशु स्वास्थ्य एवं मृदा स्वास्थ्य को बढ़ाने के लिए मुख्य अतिथि के रूप में सुझाव दिया।

कृषि वैज्ञानिकों ने दिए अहम सुझाव

इस कार्यक्रम में निदेशक विस्तार सेवाएं, राविसिंकृविवि, ग्वालियर के प्रतिनिधि एवं वैज्ञानिक के रूप में डॉ. नीरज हाड़ा ने प्राकृतिक खेती में सभी घटकों को समाहित करने के लिए सुझाय दिया। डॉ. सीपी पचौरी, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, के.वी.के.,नीमच एवं डॉ. सर्वेश त्रिपाठी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, के.वी.के.,रतलाम के द्वारा भी महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए।

इन्होंने ने दिए अपने सुझाव

कार्यक्रम में डॉ. आनन्द कुमार बड़ोनिया, उप संचालक कृषि विभाग, के.एस. सोलंकी उप संचालक, उद्यानिकी विभाग, एस.के. महाजन, क्षेत्रिय प्रबंधक इफ्को, योगेन्द्र सैनी, जिला प्रबंधक नाबार्ड, ज्योति नेहवाल, महिला एवं बाल विकास, रामेश्वर पाटीदार, बीज प्रमाणीकरण अधिकारी एवं जिले के उत्कृष्ट कृषक इन्दरसिंह चौहान, वल्लभ पाटीदार, देवराम साहू, ऊकारलाल धाकड़, बद्रीलाल चौहान, कंवरलाल मालवीय, राकेश पाटीदार ने भी अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिए। कार्यक्रम के अंत में आभार डॉ. एस.पी. त्रिपाठी ने माना।

मक्का फसल की प्रति हेक्टेयर बीमाधन राशि 40 हजार रुपए

किसान न करें देरी, खरीफ फसल बीमा कराने की अंतिम तिथि 31 जुलाई

रतलाम। जागत गांव हमार

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना अन्तर्गत जिले में अधिसूचित की जाने वाली खरीफ फसलों की का प्रकाशन किया जा चुका है। तहसील स्तर पर कपास एवं जिला स्तर पर उड़द, मूंग तथा पटवारी हल्का स्तर पर सोयाबीन एवं मक्का फसल को अधिसूचित किया गया है। कृषकों के लिए खरीफ मौसम में प्रीमियम दर अनाज, तिलहन एवं दलहनी फसलों के लिए बीमित राशि का दो प्रतिशत या वास्तविक दर जो भी कम हो, कपास के लिए बीमित राशि का 5 प्रतिशत या वास्तविक दर जो भी कम हो देय होगी।

उपसंचालक कृषि विजय चौरसिया ने बताया कि सोयाबीन की फसल प्रति हेक्टेयर बीमाधन राशि 52 हजार रुपए जिसकी 2 प्रतिशत राशि 1040 रुपए है। इसी क्रम में मक्का फसल की प्रति हेक्टेयर बीमाधन राशि 40 हजार रुपए है जिसकी बीमा प्रीमियम 2 प्रतिशत राशि 1600 रुपए है। मूंग फसल की प्रति हेक्टेयर बीमाधन राशि 40 हजार रुपए है जिसकी बीमा प्रीमियम 2 प्रतिशत राशि 600 रुपए है। कपास फसल की प्रति हेक्टेयर बीमाधन राशि 60 हजार रुपए है, जिसकी बीमा प्रीमियम 2 प्रतिशत राशि 300 रुपए है। फसल बीमा करवाने की अंतिम तिथि 31 जुलाई है।

ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी से सम्पर्क करें

खरीफ 2023 से सभी कृषकों के लिए योजना को स्वैच्छिक/ऐच्छिक किया गया है। योजना में प्रावधान किया गया है कि अल्पकालिक फसल ऋण लेने वाले कृषक को अपनी फसलों की बीमा नहीं करवाना चाहते हैं, वे कृषक बीमांकन की अंतिम तिथि से सात दिवस पूर्व तक संबंधित बैंक से लिखित में आवेदन कर निर्धारित प्रपत्र में भरकर योजना से बाहर जा सकते हैं। अल्पकालिक फसल ऋण प्राप्त करने वाले कृषकों की फसल का बीमा संबंधित बैंक द्वारा किया जाएगा। अऋणी कृषक, ओव्हरड्यू कृषक जिसका बैंक में बचत खाता है, अपनी अधिसूचित फसलों का बीमा बैंक, लोक सेवा केन्द्र एवं कार्यरत बीमा कम्पनी के अधिकृत एजेंट के माध्यम से करवा सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए क्षेत्र के वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी एवं ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी से सम्पर्क करें।

मछुआ बोर्ड के अध्यक्ष ने 530 किसान क्रेडिट फार्म व 455 मछुआ कार्ड दिए

खरगोन। जागत गांव हमार

मछुआ कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष एवं कैबिनेट दर्जा प्राप्त मंत्री सीताराम बाथम ने प्रवास के दौरान कहार धर्मशाला मंडलेश्वर में आयोजित कार्यक्रम में 530 किसान क्रेडिट कार्ड फार्म एवं 455 मछुआ कार्ड का वितरित कर मछुआरों को विभागीय योजनाओं के संबंध में अवगत कराया। साथ ही समाज के उत्थान व कल्याण के लिए नई योजना बनाने की बात कही।

मध्यप्रदेश शासन की लाडली बहना योजना में जिन मछुआ बहनों के नाम छूट गए है उन्हें प्राथमिकता के साथ योजना का लाभ दिलाने की बात कही। मछुआ एवं माझी समाज से जुड़ी समस्याओं का तत्काल निराकरण करने के लिए विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया गया। मंत्री बाथम ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि खरगोन जिले में खरगोन, खंडवा, बड़वानी एवं धार जिले के मछुआरों की मछुआ महापंचायत का आयोजन जल्द ही किया जाएगा । मछुआ समाज के जिला अध्यक्ष श्री मंगत वर्मा ने मछुआ एवं केवट समाज के हित तथा उत्थान में राज्य सरकार द्वारा किस प्रकार से अच्छे कार्य किए जा रहे है? से अवगत कराया गया। इसके पूर्व मंत्री श्री बाथम के जिले में प्रथम आगमन पर मछुआ एवं माझी समाज द्वारा मंडलेश्वर में भव्य वाहन रैली निकालकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम में महेश्वर, मंडलेश्वर, कसरावद, खरगोन, बड़वाह से मत्स्य पालक तथा मछुआरा माझी समाज के लोग एकत्र हुए। कार्यक्रम के दौरान पूर्व विधायक राजकुमार मेव, मत्स्य विभाग के सहायक संचालक रमेश मौर्य एवं विभाग अमला उपस्थित रहा।

एग्री इंफ्रा फंड के तहत बैंकों के लिए नए अभियान की शुरुआत 15 जुलाई से

नई दिल्ली। जागत गांव हमार

कृषि सचिव मनोज आहूजा ने गत दिनों एग्री इंफ्रा फंड के तहत बैंकों के लिए भारत (बैंक्स हेराल्डिंग एक्सेलेरेटेड रूरल एंड एग्रीकल्चर ट्रांसफॉर्मेशन) नामक एक नया अभियान शुरू किया। 7200 करोड़ रुपये के लक्ष्य के साथ एक महीने तक चलने वाला यह अभियान 15 जुलाई से 15 अगस्त 2023 तक वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से लॉन्च किया गया, जिसमें 100 से अधिक बैंक अधिकारियों ने भाग लिया। इसमें सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के वाणिज्यिक बैंक, ग्रामीण बैंक, लघु वित्त बैंक, एनबीएफसी और चुनिंदा सहकारी बैंकों के प्रबंध संचालक/अध्यक्ष, ईडी शामिल थे। बैंकों के क्षेत्रीय अधिकारियों और मंत्रालय के अधिकारियों को संबोधित करते हुए एआईएफ के संयुक्त सचिव सैमुअल प्रवीण कुमार ने इस महत्वाकांक्षी प्रमुख योजना की शुरुआत के बाद से हुई प्रगति पर प्रकाश डाला। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने इस योजना को बढ़ावा देने के लिए बैंकों की सक्रिय भागीदारी और समर्थन की सराहना की जिसके परिणामस्वरूप देश में 31,850 से अधिक कृषि बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का निर्माण हुआ जिसमें 24,750 करोड़ की ऋण राशि एआईएफ के तहत 42,000 करोड़ रुपए के व्यय के साथ दी गई।

कृषि मंत्रालय और एआईएफ की प्रोजेक्ट मॉनिटरिंग यूनिट के समर्थन पर संतुष्टि व्यक्त करते हुए बैंको के भाग लेने वाले अधिकारियों ने एआईएफ योजना को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए कई सुझाव दिए। इस योजना को आगे बढ़ाने के लिए और सभी बैंकों से देश में कृषि बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की विशाल संभावनाओं को देखते हुए लक्ष्य हासिल करने की अपील की।

किसान ऑफलाइन और ऑनलाइन अप्लाई कर सकते हैं

मुर्गी और बकरी पालन के लिए कम व्याज पर सरकार दे रही लोन

भोपाल। जागत गांव हमार

पशु किसान क्रेडिट कार्ट योजना, जिसके तहत पशु क्रेडिट कार्ड पर बिना गारंटी के किसानों को 1,80,000 रुपए तक का लोन मिल जाता है। ये योजना खासतौर से उन ग्रामीण किसानों के लिए शुरू हुई थी जो पशुपालन का भी काम करते हैं। इस योजना की मदद से वो गाय, भैंस, मुर्गी और बकरी तक को खरीदने के लिए लोन ले सकते हैं।

लोन लेने के लिए क्या डॉक्यूमेंट लगेंगे- जो भी किसान पशुपालन के लिए लोन लेना चाहते हैं वो इस योजना के तहत अप्लाई कर सकते हैं। किसान चाहें तो इसके लिए ऑफलाइन और ऑनलाइन माध्यम से अप्लाई कर सकते हैं। अगर आप ऑफलाइन अप्लाई करना चाहते हैं तो आपको अपने नजदीकी बैंक से एक फॉर्म लाना होगा और उसे जरूरी डॉक्यूमेंट्स के साथ भर कर जमा करना होगा। इसके लिए लगने वाले डॉक्यूमेंट्स की बात करें तो इनमें- पशुओं का हेल्थ सर्टिफिकेट, बीमित पशुओं पर लोन, पशु की खरीद पर लोन, बैंक का क्रेडिट स्कोर, आवेदक का आधार कार्ड , पैन कार्ड , वोटर आईडी कार्ड, मोबाइल नंबर और पासपोर्ट साइज फोटो लगेगा।

बहुत कम दर पर मिलता है लोन

इस योजना के तहत मिलने वाले लोन के साथ सबसे अच्छी बात ये है कि इसमें आपको सिर्फ 4 फीसदी ही ब्याज देना पड़ता है। जबकि अगर आप प्राइवेट बैंकों से पशुपालन के लिए लोन लेते हैं तो आपको 7 फीसदी तक ब्याज भरना पड़ता है। इस योजना के तहत अलग अलग पशुओं पर अलग अलग राशि मिलती है। जैसे गाय पर आपको 40000 हजार तक लोन मिल जाता है। जबकि भैंस पर आपको 60000 हजार तक लोन मिल जाता है। वहीं भेंड़ बकरी पर आपको 4000 से ऊपर का लोन मिल जाता है और मुर्गी पर आपको 700 रुपए से ऊपर का लोन मिल जाता है। वहीं अगर कोई सूअर खरीदना चाहता है तो इसके लिए उसे 16000 रुपए से ज्यादा का लोन मिल जाता है।

समूह तिलहन प्रदर्शन अंतर्गत सोयबीन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

नरसिंहपुर। जागत गांव हमार

जवाहरलाल नेहरू विवि के अंतर्गत कार्यरत इकाई कृषि विज्ञान केंद्र नरसिंहपुर द्वारा वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. विशाल मेश्राम के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अंतर्गत तिलहन प्रदर्शन सोयाबीन का 30 हेक्टेयर में 75 प्रदर्शन अलग-अलग ग्रामों में किए गए क्लस्टर प्रभारी निधि वर्मा वैज्ञानिक शस्य विज्ञान द्वारा ग्राम खुलरी विकासखड चावरापाठ में कृषकों के लिए इस संदर्भ में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें कृषकों को सोयाबीन की उन्नत किस्में जी एस 20-116 की जानकारी प्रदान की। यह किस्म 95 से 106 दिन में पक कर तैयार होती है इसकी उपज 20-25 क्विंटल पर हेक्टेयर प्राप्त होती है। जिले में सोयाबीन का रकबा पीला मोजेक विषाणु के प्रकोप से दिनों दिन घटता जा रहा है। इससे फसल को 80 प्रतिशत तक हानि होती है इस केस में देखा गया कि पीला मोजेक एवं चारकोल रॉट के प्रति प्रतिरोधी है। प्रशिक्षण के दौरान डॉ. विजयसिंह सूर्यवंशी द्वारा सोयाबीन की फसल में प्रति हेक्टेयर 56 किलो यूरिया, 450-625 किलो सुपर फॉस्फेट, 34-84 किलो म्यूरेट ऑफ पोटाश डालें. सोयाबीन के बीजों का अनुकरण 70 प्रतिशत से कम नहीं होना चाहिए। यदि अनुकरण कम है तो बुवाई के दौरान उसी के अनुसार बीज का दर बढ़ाना चाहिए। बुवाई से पहले सोयाबीन के बीजों को थीरम, कार्बेन्डाजिम से शोधन करें त्पकहम एवं थ्ततवू पध्दति या चौड़ी क्यारियों में बुवाई करनी चाहिए। बुवाई कतारों में करें। एक कतार से दूसरे कतार की दूरी 35-45 सेमी, पौधों की दूरी 4-5 सेमी होनी चाहिए।

यंत्रदूत ग्राम में रेज्ड बैड प्लांटर का प्रदर्शन

रायसेन। कृषि अभियांत्रिकी विभाग, रायसेन एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन के संयुक्त तत्वाधान में यंत्रदूत ग्राम डण्डेरा व अण्डोल में कृषि शक्ति योजना अन्तर्गत सोयाबीन फसल की बुवाई के लिये रेज्ड बैड प्लांटर मशीन का प्रदर्शन किया गया।

प्रदर्शन के दौरान सहायक कृषि यंत्री बी.एस. कोठारी ने कहा कि विगत कुछ वर्षों से मौसम की अनिष्चितता, कम वर्षा, अल्प व अधिक वर्षा, बारिष में लम्बा अंतराल होने से खरीफ फसल, सोयाबीन, मक्का, उड़द, अरहर आदि के उत्पादन मे विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। ऐसी परिस्थिति में खरीफ फसलों की बुवाई के लिये मेढ़ नाली पद्धति एवं रेज्ड बैड पद्धति को अपनाना आवश्यक है। रेज्ड बैड प्लांटर की कीमत 80,000 से 1,00,000 तक है एवं कृषि अभियांत्रिकी विभाग द्वारा अधिकतम 50 प्रतिशत तक अनुदान दिया जाता है। डॉ. स्वप्निल दुबे, वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रमुख, कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन ने कहा कि रेज्ड बैड पद्धति में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सेमी होने से पौधे की समुचित बढ़वार होती है एवं अधिक वर्षा की स्थिति में नाली के माध्यम से खेत का पानी बाहर निकल जाता है। इसमें खाद एवं बीज के बॉक्स अलग-अलग होते हैं, जिससे खाद खेत में नीचे एवं बीज बगल में गिरता है, जिससे बीज का अंकुरण व बढ़वार अच्छी होती है व उत्पादन अधिक आता है।

बीज वितरण कार्यक्रम में कृषकों सराहनीय भागीदारी रही

समूह दलहन प्रदर्शन के अंतर्गत प्रशिक्षण

नरसिंहपुर। जवाहरलाल नेहरू विवि के अंतर्गत कार्यरत इकाई कृषि विज्ञान केंद्र नरसिंहपुर द्वारा वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. विशाल मेश्राम के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अंतर्गत दलहन प्रदर्शन अरहर का 249 हेक्टेयर में 623 प्रदर्शन अलग-अलग ग्रामों में किए गए क्लस्टर प्रभारी निधि वर्मा वैज्ञानिक शस्य विज्ञान द्वारा ग्राम आलौद, विकासखड नरसिंहपुर में कृषकों के लिए इस संदर्भ में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 05.07.2023 को रखा गया, जिसमें कृषकों को अरहर की उन्नत किस्म राजेश्वरी बीज का वितरण किया गया। यह किस्म 145 से 160 दिन में पक कर तैयार होती है इसकी उपज 18-20 क्विंटल पर हेक्टेयर प्राप्त होती है जिले में अरहर का कम होने का मुख्य कारण अधिक अवधि में पकने के कारण रबी की फसल लेने में परेशानी होती है। साथ ही अरहर में अफलन के कारण इसका रकबा जिले में कम हो रहा है। इस किस्म में रोग एवं कीडे के प्रति प्रतिरोधी क्षमता उपलब्ध है। अरहर के साथ अंतरावर्ती खेती के रूप में सोयाबीन ज्वार, उड़द की फसल लेकर रबी में होने वाली उपज में कमी को दूर किया जा सकता है। बीजोपाचार के लिए जैव उर्वरक टाइकोडर्मा 10 ग्राम/किग्रा बीज से उपचारित कर उकठा रोग से बचाव किया जा सकता है। इसकी बुआई रिज एवं फेरो एवं रेन्डबेड से करने पर बीज की बचत हो सकती है। साथ ही उत्पादन में वृद्धि होती है। बीज वितरण कार्यक्रम में कृषकों सराहनीय भागीदारी रही।

राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस पर कृषक गोष्ठी का आयोजन

किसानों के लिए लाभदायी हो सकता है खेती के साथ मछलीपालन

शिवपुरी। राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस के अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र, शिवपुरी द्वारा 10 जुलाई 2023 को राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस कृषक गोष्ठी का आयोजन कोलारस विकासखण्ड के पाड़ौदा ग्राम में केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. पुनीत कुमार के मार्गदर्शन में किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र, शिवपुरी के मत्स्य विशेषज्ञ योगेश चन्द्र रिखाड़ी ने उपथित कृषकों को राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस के महत्व को बताते हुए मत्स्य पालन से जुड़ी विभिन्न तकनीकियों के बारे में बताया। उन्होंने कृषकों से कहा कि सभी कृषकों को अपने प्रक्षेत्र पर पानी भरने वाले स्थान पर तालाब बनाकर वर्ष जल संरक्षण करना ही चाहिये। इस संग्रहित जल में कृषक मत्स्य बीज संचय कर मत्स्य पालन कर अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही कृषकों को समन्वित कृषि अपनाकर विभिन्न घटकों के साथ मत्स्य पालन को अपनाने की सलाह दी जिससे लागत में कमी के साथ अच्छा लाभ प्राप्त किया जा सकता है। कार्यक्रम के दौरान केन्द्र के कृषिवानिकी विशेषज्ञ डॉ नीरज कुमार कुशवाहा जी ने कृषकों को धान सह मत्स्य पालन तकनीक के लाभ के बारे में बताया।

गीचे लगाने को प्रोत्साहित किया

साथ ही उन्होंने खेती के साथ साथ बगीचे लगाने को प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में उपस्थित केन्द्र के दामू परियोजना अन्तर्गत मौसम विशेषज्ञ विजय प्रताप सिंह कुशवाह ने कृषकों को मौसम के बदलाव की मोबाइल एप के माध्यम से जानकारी प्राप्त करने के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम में लगभग 30 कृषकों ने सहभागिता की। कृषक भानू सिंह राजावत, मेहरबान सिंह राजावत व राजेन्द्र सिंह राजावत ने विशेषज्ञों से कृषि सम्बन्धी अन्य समस्याओं पर भी चर्चा की।

शुगर के रोगियों के लिए वैज्ञानिकों ने तैयार की गेहूं की नई किस्म

कम खाने पर ही पेट भर जाएगा और बहुत देर तक भूख नहीं लगेगी

भोपाल। जागत गांव हमार

डायबिटीज के मरीजों को अब खाने-पीने को लेकर चिंता करने की जरूरत नहीं है। पंजाब एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी ने गेहूं की ऐसी किस्म को विकसित किया है, जिसका आटा खाने से डायबिटीज मरीजों को काफी फायदा होगा। खास बात यह है कि डायबिटीज मरीजों के लिए गेहूं की इस किस्म का आटा दवा के रूप में काम करेगा। साथ ही दिल की बीमारी से पीड़ित मरीजों को भी काफी फायदा होगा। अभी देश में 13 लाख से अधिक लोग डायबिटीज के मरीज हैं। ऐसे में इन मरीजों के लिए गेहूं की यह किस्म रामबाण दवाई साबित हो सकती है।

रिपोर्ट के मुताबिक, पंजाब एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी गेहूं की जिस किस्म को विकसित किया है, उसका नाम पीडब्लू आरएस 1 है। इसका सेवन करने से ब्लड सर्कुलेशन के दौरान शरीर में ग्लूकोज धीरे- धीरे बनेगा। साथ ही पाचन क्रिया भी धीरे- धीरे होगी। ऐसे में शुगर को कंट्रोल किया जा सकेगा। इस गेहूं की सबसे बड़ी खासियत है कि कम खाने पर ही पेट भर जाएगा और बहुत देर तक भूख नहीं लगेगी। जो इंसान 6 रोटियां खाता है, उसका 3 रोटी में ही पेट भर जाएगा। इस तरह कम रोटी खाने से शुगर के साथ-साथ इंसान का वजन भी कम होगा, जिससे वह स्वस्थ्य रहेगा।

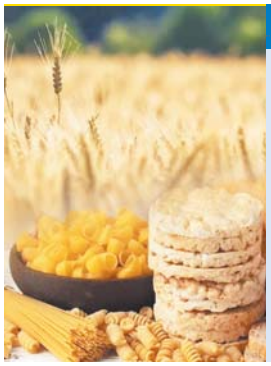

20 अक्टूबर से शुरू कर सकते हैं गेहूं की बुवाई

बता दें कि बीते महीने भी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने गेहूं की तीन ऐसी किस्मों को तैयार किया था , जो गर्मी के मौसम आने से पहले पक जाएगी। यानी कि किसान भाई मार्च महीने से ही इसकी कटाई शुरू कर सकते हैं। यानी कि सर्दी खत्म होते- होते फसल पूरी तरह से तैयार हो जाएगी और होली से पहले ही उसे काटा जा सकता है। वैज्ञानिकों ने गेहूं के इन किस्मों को बीट-द-हीट समाधान के तहत गेहूं की बुवाई करने के लिए विकसित किया था। ऐसे किसान भाई आमतौर पर गेहूं की बुवाई नवंबर महीने से करते हैं, लेकिन इन किस्मों की खेती 20 अक्टूबर से शुरू की जा सकती है।

इसमें 30.3 प्रतिशत प्रतिरोधी स्टार्च सामग्री है

यूनिवर्सिटी के प्रमुख गेहूं ब्रीडर अचला शर्मा ने इस किस्म के बारे में जानकारी देते हुए कहा यह गेहूं एक नई किस्म है. इसके खेती में किसानों की कमाई तो बढ़ेगी हीं, साथ में डायबिटीज मरीजों को भी बहुत अधिक लाभ होगा। उन्होंने कहा कि पीडब्लू आरएस 1 में कुल स्टार्च की मात्रा गेहूं की अन्य किस्मों के मुकाबले 66-70 फीसदी के बराबर होती है, लेकिन इसमें 30.3 प्रतिशत प्रतिरोधी स्टार्च सामग्री है।

वैकल्पिक पोषण को बढ़ावा देने की रणनीति पर कार्यशाला का आयोजन

कृषि में पोषक तत्वों के असंतुलित प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता कम हुई

नई दिल्ली। जागत गांवह हमार

मृदा स्वास्थ्य और स्थिरता के लिए रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम करने के लिए वैकल्पिक पोषण को बढ़ावा देने की रणनीति पर एक कार्यशाला की अध्यक्षता पिछले सप्ताह नई दिल्ली में केंद्रीय रसायन और उर्वरक मंत्री डॉ. मनसुख मंडाविया ने की थी।

मंत्री मंडाविया ने कहा, कृषि में असंतुलित तरीके से पोषक तत्वों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरता और जीवन शक्ति कम हो गई है। इसलिए सभी हितधारकों और सरकार को कृषि पर रासायनिक उर्वरकों के नकारात्मक प्रभाव को दूर करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए।

मंत्री ने आगे कहा, कृषि उत्पादन बढ़ाना हमारी जिम्मेदारी है, लेकिन साथ ही हमें कृषि प्रणालियों को इस तरह से मजबूत करने की जरूरत है कि हम मिट्टी की उर्वरता के साथ-साथ अपने नागरिकों के स्वास्थ्य से भी समझौता न करें। इसमें डॉ. मंडाविया ने हमारे देश के वैज्ञानिकों की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा, हम वैज्ञानिकों और राष्ट्र के लिए उनके योगदान

का जश्न मनाते हैं, लेकिन अब उन पर कृषि के साथ-साथ मिट्टी की उत्पादकता दोनों को बढ़ाने वाले समाधान तैयार करने के लिए लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने की जिम्मेदारी है। सरकार और कृषि हितधारकों के बीच परामर्श के महत्व पर जोर दें ताकि उनके सुझावों और फीडबैक को नीतियों में शामिल किया जा सके। डॉ. मंडाविया ने देश भर में नियमित रूप से इन परामर्शों को आयोजित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

पर्यावरण के स्वास्थ्य की रक्षा करें, साथ ही कृषि क्षेत्र को मजबूत करें

नीति आयोग के सदस्य प्रोफेसर रमेश चंद ने कहा, रासायनिक उर्वरकों का उपयोग करना आसान है, यही कारण है कि लोग उनके नकारात्मक प्रभाव को नजरअंदाज कर देते हैं। हमें इस कार्यशाला का उपयोग भारत में खेती में टिकाऊ प्रथाओं को मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए करना चाहिए। यह एक इंटरैक्टिव मंच है और इसे उपयोगी बनाने के लिए सभी हितधारकों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। उन्होंने आगे कहा, कृषि उत्पादकता के लिए ऐसे समाधान तैयार करने की जरूरत है जो किसानों का कल्याण सुनिश्चित करें, पर्यावरण के स्वास्थ्य की रक्षा करें, साथ ही कृषि क्षेत्र को मजबूत करें।

टिकाऊ कृषि प्रथाओं की आवश्यकता

उर्वरक विभाग के सचिव रजत कुमार मिश्रा ने कृषि उत्पादकता को बढ़ावा देने के साथ-साथ मिट्टी की उर्वरता को फिर से जीवंत करने के लिए सरकार द्वारा हाल ही में लिए गए फैसलों के बारे में बात की। इस संबंध में, उन्होंने कहा, 3,70,128 करोड़ रुपये के साथ, पीएम प्रणाम (धरती माता की बहाली, जागरूकता, पोषण और सुधार के लिए पीएम कार्यक्रम) का उद्देश्य प्राकृतिक और जैविक खेती को बढ़ावा देना, मिट्टी की उत्पादकता को फिर से जीवंत करना और बढ़ावा देना है। सल्फर लेपित यूरिया, जिसे यूरिया गोल्ड भी कहा जाता है, की बढ़ती भूमिका के बारे में बात की, जो न केवल देश में मिट्टी में सल्फर की कमी को दूर करेगा बल्कि किसानों को इनपुट लागत बचाने और कृषि आय बढ़ाने में भी मदद करेगा। कृषि विभाग के सचिव, मनोज आहूजा ने उल्लेख किया कि जैसे-जैसे देश में उर्वरकों का उत्पादन बढ़ा है, वैसे-वैसे टिकाऊ कृषि प्रथाओं की आवश्यकता है।

असाधारण स्वाद और पोषक तत्वों के साथ उपज ज्यादा

कटहल की नई किस्म सिद्धू और शंकरा किसानों के लिए हो सकती है फायदेमंद

भोपाल। जागत गांव हमार

भारत में किसानों को फायदा पहुंचाने के लिए यहां के कृषि वैज्ञानिक दिन-रात मेहनत करते हैं। वैज्ञानिकों ने एक नए किस्म के कटहल की खोज की है, व्यावसायिक प्रसंस्करण के लिए काफी ज्यादा उपयुक्त है। इस नए कटहल को सिद्दू और शंकरा कहा जाता है। इसे मिलाकर अब तक वैज्ञानिकों ने कटहल की तीन किस्मों की खोज कर ली है। ये तीनों किस्में भारत में पाई जाती हैं। सबसे बड़ी बात की अब तक व्यावसायिक तौर सिर्फ दो किस्मों की ही उपज होती थी, लेकिन नई किस्म मिलने के बाद अब तीन किस्में उगाई जा सकेंगी।

कहां पाया गया ये नए किस्म का कटहल

आईआईएचआर-बेंगलुरु के वैज्ञानिकों को ये कटहल हाल ही में बेंगलुरु के ही बाहरी इलाके के एक किसान नागराज के खेत में मिला। वैज्ञानिकों के मुताबिक, ये फसल अपने असाधारण स्वाद और पोषण मूल्यों के लिए जाना जाता है। इस नई किस्म के साथ सबसे अच्छी बात ये है कि इसकी उपज अन्य किस्मों से कहीं ज्यादा होती है। सबसे बड़ी बात की इस नए किस्म के एक कटहल का वजन लगभग 25 से 32 किलोग्राम तक होता है। यानी अगर आप कटहल की खेती कर उससे मुनाफा कमाना चाहते हैं तो ये नई किस्म आपके लिए सबसे ज्यादा उपयुक्त है। वैज्ञानिकों का कहना है कि वह किसान नागराज के साथ एक समझौता कर रहे हैं और कटहल के इस नए किस्म को और बढ़ाने पर जोर दे रहे हैं। अगर सब कुछ सही रहा तो कुछ वर्षों में ये नया कटहल पूरे भारत में लगने लगेगा और हर साल किसानों को मोटा मुनाफा देगा।

देशभर में मृदा जांच इनके लिए प्रयोगशालाएं

किसानों को अच्छी उपज के लिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड जरूरी

भोपाल। जागत गांव हमरा

किसानों की अच्छी उपज के लिए सरकार कई तरह की योजनाएं चला कर उनकी मदद करती है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना भी इसी तरह की योजना है। इसके तहत किसान अपनी मिट्टी की जांच कराते हैं और फिर रिपोर्ट के आधार पर खेती करते हैं। ऐसा करने से खेती में उनकी लागत भी कम लगती है और उपज भी पहले के मुकाबले बढ़ जाती है। ऐसा इसलिए क्योंकि जब आपकी मिट्टी की जांच होती है तो यह पता चल जाता है कि आखिर मिट्टी में क्या कमी है और इसे कैसे सही करना है। इसके साथ साथ ये भी पता चल जाता है कि आखिर इस

मिट्टी में कौन सी फसल बेहतर होगी।

इस कार्ड को बनवाने के लिए आपको योजना की ऑफिशियल वेबसाइट soil-health.çac.gov.in पर जाना होगा। इसके बाद होम पेज पर मांगी गई जानकारी भरकर लागिन के ऑप्शन पर क्लिक करना होगा। पेज खुलने पर राज्य यानी अपना राज्य चुनें और कान्टीन्यू के बटन पर क्लिक करना होगा। अगर पहली बार आवेदन कर रहे हैं तो नीचे रजिस्टर न्यू यूजर पर क्लिक करें और रजिस्ट्रेशन फॉर्म भर दें। आपको इस रजिस्ट्रेशन फॉर्म में मांगी गई पूरी जानकारी भरनी होगी। फिर फॉर्म में सभी जानकारी सही-सही भरकर आखिर में सबमिट के बटन पर क्लिक कर देना होगा। ऐसा करने के बाद लॉगिन करके मिट्टी की जांच के लिए आवेदन कर सकते हैं।

इस कार्ड से लाभ क्या है?

मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के तहत कोई भी भारतीय किसान मिट्टी की जांच करवा सकता है। इस कार्ड की मदद से किसान पता लगा सकते हैं कि मिट्टी में किन पोषक तत्वों की कमी है, पानी कितना इस्तेमाल करना है और किस फसल की खेती करने से उन्हें लाभ मिलेगा। कार्ड बनने के बाद किसानों को मिट्टी की सेहत, उत्पादक क्षमता, मिट्टी में नमी का स्तर, क्वालिटी और मिट्टी की कमजोरियों को सुधारने के तरीकों के बारे में बताया जाता है। मिट्टी की जांच के लिए देशभर में मृदा जांच इनके लिए प्रयोगशालाएं भी लगवाई गई हैं। इन प्रयोगशालाओं में वैज्ञानिकों द्वारा जांच के बाद मिट्टी के गुण-दोष की लिस्ट तैयार की जाती है। इसके साथ ही इस सूची में मिट्टी से जुड़ी जानकारी और सही सलाह मौजूद होती है। मृदा स्वास्थ्य काडज के अनुसार खेती करने से फसल की उत्पादन क्षमता और किसानों की आय में बढ़ोतरी तो होती ही है, इसके साथ साथ खाद के उपयोग और मिट्टी का संतुलन बनाने में भी मदद मिलती है।

राजधानी भोपाल से लगे किसानों का आरोप, परेशान कर रहे बैंक अधिकारी

पशुपालन योजना का लाभ लेने फेरे लगा रहे किसान

भोपाल। जागत गांव हमार

नजीराबाद क्षेत्र के किसान पशुपालन योजना के तहत लोन लेने के लिए बैंकों और शासकीय कार्यालयों के चक्कर लगा रहे हैं। इसके बाद भी उनकी सुनवाई नहीं हो रही है इससे परेशान किसानों ने कलेक्ट्रेट में शिकायत दर्ज कराई है। इस पर भी अभी किसी तरह का कोई हल नहीं निकल सका है। किसानों ने बैंक अधिकारियों पर कई तरह के आरोप लगाए हैं। हालांकि प्रशासन मामले की जांच करने की बात कह रहा है। जनपद पंचायत बैरसिया की ग्राम पंचायत रमाहा के रहने वाले हेम सिंह गुर्जर, काशी राम सहित लगभग 10 किसानों ने कलेक्ट्रेट पहुंचकर शिकायत दर्ज कराते हुए बताया कि उन्होंने नजीराबाद की बैंक आफ इंडिया में सरकार की गौसंवर्धन योजना के तहत लोन लेने के लिए आवेदन किया था, ताकि हम लोन मिलते ही पशुपालन शुरू कर दूध का कारोबार शुरू कर सकें। सभी तरह की कागजी प्रक्रिया पशुपालन विभाग के अधिकारियों द्वारा पूरी करा दी गई है, लेकिन अब बैंक प्रबंधन द्वारा हमारा लोन स्वीकृत नहीं किया जा रहा है। जबकि हम पर किसी तरह का कोई बकाया भी मौजूद नहीं है। बैंक प्रबंधन शासन की योजनाओं का लाभ देने में लापरवाही बरत रहे हैं।

कमीशन लेने का लगाया आरोप

किसानों ने बैंक प्रबंधन पर आरोप लगाया है कि गांव के लगभग 10 किसानों का लोन स्वीकृत कर दिया गया है। इनका लोन इसलिए स्वीकृत किया है क्योंकि इन्होंने बैंक अधिकारियों को लोन के बदले में कमीशन दिया है। हम लोग जब भी बैंक जाते हैं तो बजट नहीं होने सहित अन्य बहाने बनाकर लौटा दिया जाता है। इसी वजह से हमने कलेक्ट्रेट कार्यालय में शिकायत की है।

25 से 60 हजार रुपए तक लोन

किसानों ने बताया कि उक्त योजना के तहत पशुपालन के लिए लगभग 25 से 60 हजार रुपए तक का लोन मिलता है। अभी तक 10 से अधिक लोगों को लोन दे दिया है, मतलब छह लाख से अधिक की राशि आवंटित की गई है। जबकि हम लोगों के लिए लोन राशि नहीं होने की बात कही जा रही है।

किसानों द्वारा पशुपालन के लिए आचार्य विद्यासागर गोसंवर्धन योजना के तहत लोन के लिए आवेदन किया है। बैंक ने कुछ किसानों को लोन उपलब्ध करा दिया है। वहीं जो किसान बचे हुए हैं उनको लोन क्यों नहीं दिया जा रहा है, इसकी जांच कराई जा रही है। यदि किसान डिफाल्टर नहीं हुए तो उनको भी लाभ दिलाया जाएगा।
- डॉ. अजय रामटेके, उपसंचालक, पशु चिकित्सा सेवाएं

तेवरी ग्राम जिसकी पहचान स्वीट कॉर्न बना

-देश के कोने-कोने में दिला रहे कटनी को पहचान

स्वीट कॉर्न की खेती से किसान नाम के साथ कर रहे कमाई भी

भोपाल। जागत गांव हमार

बारिश के मौसम में भुट्टे खाना किसे पसंद नहीं। लेकिन जब बात कटनी के स्वीट कॉर्न की आती है तो लोगों के मुंह में पानी आ ही जाता है, क्योंकि कटनी के स्वीट कॉर्न न सिर्फ मीठे बल्कि बड़े नरम और दानेदार होते है। इन्हें बच्चे से लेकर बूढ़े भी बड़े चाव से खाते हैं। स्वीट कॉर्न के शौकीन मध्यप्रदेश ही, नहीं बल्कि देश के अलग-अलग हिस्सों में भी हैं जो अक्सर ऑर्डर देकर मंगवाया करते हैं। कटनी मुख्यालय से 35 किमी दूर स्थित तेवरी ग्राम जिसकी पहचान स्वीट कॉर्न बना हुआ है। यहां के किसानों ने परंपरागत खेती को छोड़कर स्वीट कॉर्न की खेती ओर अपना रुख कर लिया है। वजह कम वक्त में ज्यादा मुनाफा जो दे रही है। हालांकि स्वीट कॉर्न की खेती शुरू से इतनी प्रचलित नहीं थी। इसके लिए कृषि विभाग ने किसानों के बीच जाकर महीनों प्रशिक्षण दिया। फसल से निकले स्वीट कॉर्न का प्रचार-प्रसार पूरे मध्यप्रदेश के साथ-साथ देश भर में करवाते हुए अपनी अहम भूमिका निभाई।

परंपरागत खेती छोड़ी

कृषि अधिकारी मनीष मिश्रा बताते हैं कि शुरू में हम लोगों ने स्वीट कॉर्न की खेती के लिए बहुत मेहनत की। लेकिन किसानों को जैसे-जैसे फायदा मिलने लगा तो उन्होंने परंपरागत खेती छोड़ इसकी खेती करने लगे। स्वीट कॉर्न की खेती कटनी जिले के तेवरी ग्राम से शुरू हुई थी। उसके बाद आस-पास के ग्राम सहित बाकी विकास खंडों में होने लगी है।

हाईवे पर स्वीट कॉर्न की दुकान

तेवरी के किसान तीरथ प्रसाद कुशवाहा बताते हैं कि शुरू में वे पांच एकड़ में स्वीट कॉर्न की खेती करते थे। लेकिन मुनाफा देखते हुए अब 10 एकड़ में करने लगे हैं। इसे बेचने के लिए उन्हें ज्यादा मशक्कत भी नहीं करनी पड़ती, क्योंकि ज्यादातर भुट्टे हाईवे में हमारे द्वारा लगाई गई दुकानों से बिक जाते हैं। उसका स्वाद लेने शहर के लोग प्रतिदिन आते हैं। खेती के फायदे बताते हुए मझगवां के किसान शालिग्राम कुशवाहा ने कहा कि स्वीट कॉर्न की खेती महज दो महीने की होती है।

70 हजार महीना कमाई

हाईवे किनारे भुट्टे की दुकान पर बैठी महिला रुकमणी कुशवाहा ने बताया कि वह खुद अपने पति के साथ स्वीट कॉर्न की खेती करने के साथ मुख्य मार्ग पर फुटकर दुकान लगाने का काम करती हैं। रुकमणी बताती हैं कि वे पिछले 13 साल से भुट्टे की खेती करती आ रही हैं। लेकिन स्वीट कॉर्न में बढ़ते मुनाफे को देखते हुए इसकी खेती बढ़ाई और अब छह एकड़ में स्वीट कॉर्न लगाते हुए 50 से 70 हजार महीने का कमा लेती हैं। हाइवे किनारे मेरी फुटकर दुकान से प्रतिदिन डेढ़ से दो सौ भुट्टे स्वीट कॉर्न सहित बिक जाते हैं।

स्थानीय लोगों को रोजगार

दो माह में होने वाली स्वीट कॉर्न की खेती अब किसानों के साथ ही स्थानीय लोगों को रोजगार भी दे रही। इससे किसान कम वक्त में ज्यादा मुनाफा कमाते हुए अपना जीवन बेहतर कर रहा है। वहीं, स्वीट कॉर्न का स्वाद देश के कोने-कोने में पहुंचकर कटनी जिले को नई पहचान दिला रहा है।

मुरैना में बाजरा की बोवनी 60 फीसदी तक पूरी

-रकबा बीते साल 1 लाख 76 हजार हेक्टेयर था

मुरैना। अंचल में हुई अच्छी बारिश के चलते जिले भर में बाजरे की बुवाई 60 फीसदी तक हो चुकी है। कृषि अधिकारियों का मानना है कि इस बार जिले में खरीफ की फसलों की बोवनी पारंपरिक रकबे से ज्यादा हो सकती है। 8-10 दिन में अच्छी बारिश के आसार हैं, जिससे बाजरे की फसल को लाभ होगा। सहायक संचालक कृषि अनंत बिहारी सरैया ने बताया कि जिले में एक लाख हेक्टेयर में बाजरा बोया जा चुका है। जबकि बाजरे का रकबा बीते साल 1 लाख 76 हजार हेक्टेयर था। इस लिहाज से इस बार बाजरा का रकबा बढ़ सकता है। सरैया के मुताबिक सबसे ज्यादा बोवनी अभी तक सबलगढ़, कैलारस में हुई है। जौरा, मुरैना, अंबाह और पोरसा में बोवनी जारी है। यानि आने वाले 8 से 10 दिनों में जो बारिश होगी, उससे पहले बोवनी का काम लगभग पूरा हो जाएगा। बाजरा के अलावा एक हजार हेक्टेयर में अरहर, 2 हजार हेक्टेयर में मूंग, 3100 हेक्टेयर में ग्वार, 11 सौ हेक्टेयर में उड़द, 200 हेक्टेयर में मूंगफली, 4500 हेक्टेयर में तिली, 400 हेक्टेयर में ग्वार की बोवनी की गई है। पर्याप्त बारिश के कारण ही बाजरे की बोवनी इस बार समय पर हो पा रही है।

कंपनी जिलों में अलग-अलग फसलों का बीमा करेगी

प्रदेश में पीएम फसल बीमा करने के लिए में जिला स्तर पर कंपनियों के नाम तय

भोपाल। राज्य सरकार ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के खरीफ 2023 से रबी 2025-26 सीजन की फसलों का बीमा करने के लिए जिला स्तर पर फसल बीमा कंपनियों के नाम तय कर दिए हैं। जिलेवार क्रियान्वयन एजेंसी (बीमा कंपनी) का चयन किया गया है। यह बीमा कंपनी प्रदेश के सभी जिलों में अलग-अलग फसलों का बीमा करेगी। किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग ने किसानों की सुविधा के लिए इनकी सूची भी सार्वजनिक कर दी है।

जिला और फसल बीमा कंपनी

- उज्जैन इफको टोकियो जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
- मंदसौर, नीमच, रतलाम - एग्रीकल्चर इंश्योरेंस कंपनी आफ इंडिया लिमिटेड
- देवास, इंदौर- एसबीआइ जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
- आगर मालवा, शाजापुर- एग्रीकल्चर इंश्योरेंस कंपनी आफ इंडिया लिमिटेड
- भोपाल, सीहोर- एग्रीकल्चर इंश्योरेंस कंपनी आफ इंडिया लिमिटेड
- रायसेन, विदिशा- एसबीआइ जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
- आलीराजपुर, बड़वानी, बुरहानपुर, धार, झाबुआ, खंडवा, खरगोन- एचडीएफसी एग्रो जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
- अशोकनगर, भिंड, दतिया, गुना, ग्वालियर, मुरैना, राजगढ़, शिवपुरी- एग्रीकल्चर इंश्योरेंस कंपनी आफ इंडिया लिमिटेड
- अनूपपुर, बालाघाट, छिंदवाड़ा, डिंडोरी, जबलपुर, कटनी, मंडला, नरसिंहपुर, सिवनी, शहडोल, -उमरिया- एग्रीकल्चर इंश्योरेंस कंपनी आफ इंडिया लिमिटेड
- बैतूल, हरदा, नर्मदापुरम: एसबीआइ जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
- छतरपुर, दमोह, निवाड़ी, पन्ना, रीवा, सागर, सतना, सीधी, सिंगरौली, टीकमगढ़ एग्रीकल्चर इंश्योरेंस कंपनी आफ इंडिया लिमिटेड

जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

» जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।

» समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूर्ण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।

» ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 94250485889

"आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, **संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)